आयुर्वेद

अष्टांग हृदय

तुलसीदास

इस से किसी।
सभ्यता का जिन्हाना तुलसीदास ने बाबू अरुह अनुभवियों से छुआछात-पालक और छुआछात-सदाक," भाषक अनुसार लिखा था। इस और सन् १६०४-०५ से "इस ठीमेंगे व इस डेलिघेरस ओ की रचना की। सन् १६०७ से तुलसी भाषक दूँसरा अनुसार लिखकर छुआछात लिखा। घनाभाव डेसी सभाव "कुठ रचिया," की रचना की। सन् १५९९ से एक अनुसार छुआर्थ पर लिखना-लिखने नाम," भाषक भाषक से "हेमचंद्र दो था। सन् १५९४ ई० से रचना के लिखा। १३ साल की आठ में इस रचना के तुलसीदास की पुस्तक आजी सबसे नहेंगी रचना में अपना से तुलसीदास ने आज भाषा के एक छंदाक

तुलसीदास की कृतियाँ

नहें आया।
- पूरा साल के अन्दर दो सुन्दरी पाठ्यपुस्तकें हैं। आज्ञ दो सब पाठक नहें आए। आज्ञ दो बड़ा छात्रों को आज बँधपुस्तकें की दैवाल आज नहीं और अनुसार का एसा लिखा था। आजकल बहलाव से दो अपने आपुस्त। आज दो पाठ्य अनुसार नहीं रचना की रचना की। सन् १५९४ ई० से "इस बनाई" पाठ्यक्रम की पुस्तक रचना आज लिखा। १३ साल की आठ में इस रचना के तुलसीदास की पुस्तक आजी सबसे नहेंगी रचना में आज भाषा के एक छंदाक तुलसीदास की कृतियाँ

अयोध्या भारतीयों का नया आधीकृत किया। आज्ञा ग्रामस्थ की बच्चों का रचा-रचना पर्यट्ट नहें दूर सदा के लिए बैठे आया लिखना। और इस १६३६ से आजकल दुर्घटना हो आया। आए इस छूठ से न बनारस आज के बारना ८ अक्टूबर सहेजाया लिखा। आखिरी पुस्तक सन्त" की रचनाओं से "रामचरितमानस" का हो आजकल आज से हो आज सन् १६३६ ई० से तुलसीदास छोड़ गया।

दो बाप बनारस था।
था। वह हाथरोज़ से भाषियों पाठक के पूरे हैआ था। आजकल लिया का पास आसाढ़ राम बनारस बाँध से तार भाषा दूँ पसंदी आए से तुलसीदास का जन्म ३१ सितंबर सन् १५५० को

प्रार्थना

प्रार्थना

ऐ मेरे मालिक मेरे ईश्वर,
मैं रहूं निर्भय अति निडर।

मुझको बुद्धि निर्मल दे,
मन जैसे खिला कमल।

डिगूं नहीं बाधाओं से,
डरूं नहीं उग्र हवाओं से।

तूफानों से न घबराऊं,
विपदाओं से पार पाऊं।

रहूं सदा मैं तेरा भक्त,
डरूं नहीं बना रहूं सख्त।

तेरे ही गुण गाऊं हरदम,
जीवन में अपनाऊं संयम।

विनम्र रहूं करूं याचना,
नित करूं मैं प्रार्थना।

समय का हेर फेर

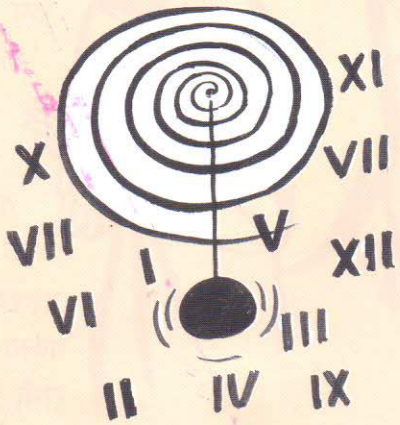

बड़ी जोर से धडकता है मेरा हार्ट,
जब पेपर होता है स्टार्ट।
उस समय देखनेवाली होती है मेरी हालत,
नहीं होती आसपास मिलने वाली राहत।
कभी इच्छा होती है कि सबसे ज्यादा नम्बर लाऊँ,
कभी डर लगता है कि कहीं फेल न हो जाऊँ।
मन तो होता है कि किसी तरह रुक
जाए घड़ी की सुई।
पर वो चलती ही रहती है, डराती रहती है
मुझे मुई।

प्रशान्त सिंह

वर्षा की बूंदे आई

पढते–पढते आई बूँदो की आवाज,
छम–छम टप–टप का साज।
दिल और दिमाग धूमा,
वर्षा की बूँदो में धूमा।
पढने का तो किया दिखावा
मन भीगने की कल्पनाओं में मागा।
काश यह छत न होती,
तो हमारी खुशी दुगनी होती।

बारिश

बारिश आई छम–छम–छम,
बाहर जाने का किया है मन।
मित्रों को भी नीचे बुलाया,
अपनी बहन को हमने जगाया।

कीचड़ में खेल कर कपड़ों का हुआ बुरा हाल,
मन किया ऐसे ही बीते पूरा साल।
बारिश में देखा मोरों का नाच,
भूल गए हम कौन सा था मास।
बगीचे और फ़सलों को देख है मन खिलता,
लोगों व किसानों को है सुख मिलता।
बारिश आई छम–छम–छम,
क्या आपका भी बाहर जाने का किया है मन !

क्या लिखूँ

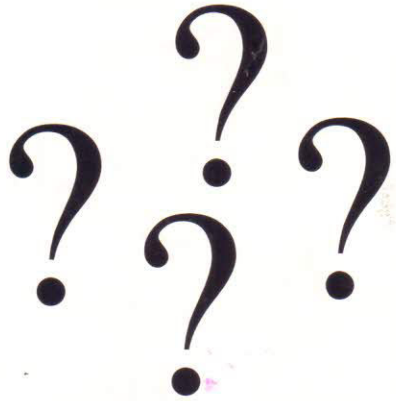

स्कूल की पत्रिका छप रही है,
मिला मुझे समाचार।
रचनाएँ दो चार।
कविता लिखूँ, कहानी लिखूँ,
या फिर कोई लेख।
इसी सोच में बैठा मैं,
सिर तकिए पर टेक।
पूछा भैया विषय बताओ,
या कोई प्रसंग।
जिसे पढ़े मजे मे सब,
और हो न कोई तंग।
इन्हीं विचारों में खोया।
जब दिमाग होने लगा खराब,
तब टूटे फूटे शब्दों से
कविता हो गई तैयार।

गौरव सिंह परिहार
छठीं–सी

पहेलियाँ

हरी-हरी मछली के,
हरे-हरे अण्डे।
जल्दी से नाम बताओ,
नही तो पड़ेगे डण्डे

अनपढ़ से ना करती बात,
रखती सीने अपने ज्ञान।
पायी जाती सभी जगह,
साक्षर करते मेरा गुणगान।

लोहा खींचू ऐसी ताकत है,
पर रबड़ मुझे हराता है।
खोई सूई मैं पा लेता हूँ,
मेरा खेल निराला है।

संगति का फल

सुरेश अपने माता पिता का इकलौता बेटा था। वह उनकी आँखों का तारा था। माता–पिता उसका बहुत ध्यान रखते थे।

बड़ा होने पर वह बुरी संगत में पड़ गया। आए दिन उसकी शिकायत आने लगी। उसके माता–पिता बहुत दुखी थे और उसको सुधारने के उपाय सोचने लगे।

एक दिन सुरेश का पिता उसे बाज़ार ले गया। उसने सुरेश के लिए एक पेटी सेबों की खरीदी। घर लौटकर उन्होने पेटी के सेबों को साफ़ किया और उन्हें वापस पेटी में रख दिया उन सेबों में एक गला हुआ सेब भी था। सुरेश के पिता ने जान बूझ कर सुरेश को वह गला सेब अच्छे सेबों के बीच रखने को दिया।

दूसरे दिन जब सुरेश ने सेबों की पेटी खोली तो उसने सब सेबों को गला हुआ पाया। उस एक गले हुए सेब ने बाकी सभी अच्छे सेबों को गला दिया था। पिता ने पुत्र को समझाया कि गले हुए सेब की तरह बुरी संगत भी अच्छे लड़कों को ले डूबती है। एक गंदी मछली सारे जल को गंदा कर देती है। पिता की बातों का सुरेश पर बहुत प्रभाव पड़ा। उसने बुरी संगति का त्याग किया और अच्छे लड़कों के संग रहकर एक अच्छा नागरिक बना।

शिक्षा – बुरी संगत का, बुरा नतीजा होता है। दृष्टि रावत-8B

दृष्टि रावत

प्रेरक प्रसंग

सभ्यता और सज्जनता की कसौटी

काषाय वस्त्रधारी स्वामी विवेकानन्द अमेरिका के शिकागो नगर में सड़क से जा रहे थे। उनका यह वेश अमेरिकावासियों के लिए कौतूहल की वस्तु था। पीछे आ रही एक अमेरिकन महिला ने अपने साथी पुरुष से कहा, "जरा इन महाशय की इस अजीब पोशाक को तो देखो !"

स्वामीजी ने वह व्यंग्य सुना। वे जरा रुके और मुड़कर उस महिला से बोले, "देवी! आपके देश में दर्जी सभ्यता के उत्पादक और कपड़े सज्जनता की कसौटी माने जाते हैं। पर जिस देश से मैं आया हूँ, वहाँ कपड़ों से नहीं, मनुष्य के चरित्र से उसकी पहचान की जाती है।"

यह युनकर वह महिला बड़ी लज्जित हुई। ईशा - 8-C

लोभी किसान

किसी गाँव में एक लोभी किसान रहता था। खेत मकान, घोड़ा, गाय, पशु आदि होने पर भी वह सदा बेचैन रहता था। वह अधिक धन प्राप्त करने के लिए लोगों से उपाय पूछता रहता।

एक दिन एक साधु बाबा उसके खेत के पास से गुज़रे किसान ने बाबा की सेवा की और उन्हें अपना दुख: सुनाया। साधु बाबा ने उसे मुर्ग़ी दी जो रोज़ सोने का अंडा देती थी बाबा ने सोचा कि प्रतिदिन एक सोने का अंडा प्राप्त करके किसान थोड़े दिनों में मालामाल हो जाएगा और उसका दु:ख दूर हो जाएगा।

साधु बाबा के जाने के बाद किसान को रोज़ाना एक सोने का अंडा मिलने लगा परन्तु लोभी किसान की बेचैनी बढ़ गई। वह तो एक रात में ही करोड़पति बन जाना चाहता था उसने मुर्गी के पेट से सभी अंडे निकालने के लिए उसका पेट काट डाला। दुर्भाग्य से उसे कोई अंडा प्राप्त न हुआ। मुर्ग़ी भी मर गई वह बहुत पछताया। अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत।

शिक्षा – लालच बुरी बला है। सुरभि, 6D

साक्षर माता, साक्षर राष्ट्र

भूमिका :– सदियों से ही धरती पर,
अपमान नारी को थमाया है
पर ईश्वर ने सौ–सौ बार
राज यही सुनाया है,
"धरती को साक्षर बनाने को
माता ने सरस्वती रुप पाया है।" (स्वरचित)

बात सोलह आने सच है। धरती के निर्माता भगवान श्री ब्रह्मा ने जब अपनी पुत्री धरा बनायी थी तब ही उसके विकास के लिए उन्होंने सरस्वती एवं लक्ष्मी माता को बनाया। फ़िर पृथ्वी पर मानव जीवन का प्रारम्भ हुआ और पुरूष ने नारी पर अत्याचार शुरु किए, तभी से धरती अपनी तबाही की ओर चल रही है। नारी हमेशा से ही धैर्य एवं ममता की मूरत रही है। परन्तु कुदरत का मानो यह नियम हो कि अच्छे को इम्तिहान के दौर से गुज़रना पड़ता है।

यह बात कही या पढ़ी बातों पर नहीं अपितु आँखों देखी, समझी हुई बातों पर आधारित है। साक्षर माता साक्षर राष्ट्र की ओर पहली सीढ़ी है। यही एकमात्र उपाय है जो किसी भी देश को उन्नति दिला सकता है। हर परिवार में यही देखा गया है कि पुरूष वर्ग दफ़्तर/व्यवसाय चलाता है और महिला घर चलाती है। उनकी सन्तान का अधिकतर समय अपनी मां के साथ व्यतीत होता है। दफ़्तर से थककर लौटा इन्सान घर पर अपनी सन्तान पर कहां ध्यान दे सकता है? उसकी परवरिश मां से बेहतर कोई नहीं कर सकता। परन्तु यदि मां ही अनपढ़ है तो फिर अपनी सन्तान को वह क्या पाठ पढ़ाएगी ?

नारी और समस्याएं :- इन्सान चाँद पर पहुंच गया है, तारे तोड़ने का ख्वाव रखता है, परन्तु उसकी सोचने की क्षमता उतनी ही पिछड़ी है जितनी ये संसार। आज भी औरत शोषण एवं अत्याचार का लक्ष्य है। पुत्री के जन्म से पहले ही उसके माता पिता उसे ख़त्म करने की योजनाएं बनाने लगते हैं। उसके जन्म के उपरांत उसे परिवार पर बोझ या परायी मानकर चलते हैं। उसके बड़े होने से पहले उसे काम पर लगा देते हैं और सरकार ने नारी शिक्षा मुफ़्त कर दी है परन्तु फ़िर भी असाक्षरता में कोई गिरावट नहीं है। इसके लिए सरकार को कठोर कदम उठाने होंगे। उन्हे घर–घर जाकर घर की बेटी और बहू को शिक्षा का महत्व बताना होगा। अपने घर की, पड़ोस की लड़कियों को विद्यालय भेजना होगा। उनके माता–पिता को समझाना होगा। तभी सभ्यता का विकास हो सकता है।

उपसंहार :- यदि धरती को कुदरत के शाप से बचाना है तो नारी का सम्मान करना होगा। उसकी शक्ति पहचाननी होगी। नारी को शिक्षित कराना होगा, तभी दुनिया हकीकत में विकसित मानी जाएगी। नारी के प्रति धर्म समझना ही नहीं निभाना भी होगा।

इशिका बालियान - ४-C

माँ

माँ तू कितनी अच्छी है, मेरा सब कुछ करती है
भूख मुझे जब लगती है, खाना मुझे खिलाती है।
जब मैं गंदा होता हूँ, रोज मुझे नहलाती है।
जब मैं रोने लगता हूँ, चुप तू मुझे कराती है।
माँ मेरे मित्रों में सबसे, पहले तू ही आती है।

बचपन

नन्हा प्यारा सा यह बचपन।
जीवन का एक टुकड़ा बचपन।।
नटखट नादानी का बचपन।
विद्या में जो डूबा तनमन।।
खेलकूद में गुजरा बचपन,
याद दिलाता है प्रति क्षण।।
रंग-रंगीली दुनिया में,
बीता है सुन्दर - सा बचपन।।

सूक्तियाँ

1. अहिंसा सत्य का प्राण है। उसके बिना मनुष्य पशु है। –महात्मा गाँधी
2. मनुष्य क्रोध का प्रेम से, पाप का सदाचार से लोभ को दान से और मिथ्या–भाषण को सत्य से जीत सकता है। – महात्मा बुद्ध
3. क्रोध को क्षमा से, विरोध को अनुरोध से घृणा को दया से,द्वेष को प्रेम से और हिंसा को अहिंसा की प्रतिपक्ष भावना से जीतो। – स्वामी शिवानन्द
4. जीव मात्र की अहिंसा स्वर्ग को देने वाली है। –स्वामी शंकराचार्य
5. जब कोई व्यक्ति अहिंसा की कसौटी खरा उतर जाता है, तो दूसरे व्यक्ति स्वयं ही उसके पास आकर बैर–भाव भूल जाते हैं। – महर्षि पातंजलि

अनमोल वचन

विचार ही कार्य का मूल है। विचार गया तो कार्य गया ही समझो।

महात्मा गाँधी

मन के हाथी को विवेक के अंकुश से वश में रखो।

रामकृष्ण

इस बात को समझो कि कठोर वचनों को रोकना चाहिए। अकेला कटुभाषी पुरुष संसार में सभी मनुष्यों का शत्रु है।

बाल्मीकि

जैसे बादल पृथ्वी से जल लेकर फिर पृथ्वी पर बरसा देते हैं वैसे ही सज्जन पुरुष जिस वस्तु को ग्रहण करते हैं उसका दान भी करते हैं।

कालिदास

आत्मा को जान लेने के बाद मनुष्य सत्य से नहीं डरता।

ऋग्वेद

आत्म ज्ञान

1. आत्मज्ञान सबसे बड़ा ज्ञान है। – महर्षि वेदवयास
2. वेद से उत्पन्न आत्मज्ञान मोक्ष का कारण कहा गया है। – स्वामी शंकराचार्य
3. उस आत्मा को ही जान लेने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता। – ऋग्वेद
4. केवल आत्म–ज्ञान ही ऐसा है जो सब जरुरतों से परे कर सकता है। – स्वामी रामतीर्थ
5. हमें अपनी आत्मा का ज्ञान चरित्र से ही मिल सकता है। – महात्मा गांधी

संग्रहित

अध्यापिका- इतने दिन से कहां थे? छात्र- बर्ड फ्लू हो गया था। अध्यापिका- पर ये तो बर्ड में होता है इंसानों में नही। छात्र- इंसान समझा ही कहां आपने...रोज तो मुर्गा बना देती हो!

संता, बंता रात को सड़क पर घूम रहे थे।

संता: बहुत गर्मी है यार...

बंता: हां, दिन होता तो कहीं छांव में बैठ जाते!

पंडीत जी हवन करते समय एक चम्मच घी आग में डालते और एक चम्मच घी अपने डिबबे मे डालते जा रहे थे!

पास बैठे अपने एडमिन साहब चिल्लाकर बोले, "घृतम चोरम, घृतम चोरम !"

पंडीत जी एडमिन साहब को चुप कराते हुए बोले, "पुत्र ना कर शोरम, ना कर शोरम! आधा तोरम, आधा मोरम" ॐ स्वाह ॐ स्वाह ॐ स्वाह !!